3S5 EE2

D.El.Ed. Examination
JUNE, 2018
MODEL ANSWER AND SCHEME OF MARKING
Second Year (2016 Revised Syllabus)
PEDAGOGY OF LANGUAGE (II Language)
HINDI
Time : 3.00 to 5.00 Hrs.

Date : 6/6/2018 **(12 Pages)** **Max. Marks : 40**

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सूचनाओं के अनुसार लिखिए :

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) एकाग्रता 1

(2) भाषा। 1

(ब) विसंगत शब्द पहचानिए :

(1) अध्ययन 1

(2) अक्षर। 1

(क) सही या गलत पहचानिए : 1

सही।

(ड) शुद्ध शब्द पहचानिए :

संस्कृति।

(इ) प्रत्यय लगाइए : 1

सफलता।

(फ) वचन बदलिए : 1

किताबें।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए :

(1) भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है – 2

1. कोई भी भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है।

2. किसी बालक को इंग्लैंड में रखा जाए तो वह हिंदी भाषा न बोलकर अंग्रेजी बोलेगा।

3. भाषा वातावरण में सीखी जाती है, अनुकरण से सीखी जाती है।

4. जिस परिवेश में बालक बढ़ता है, रहता है वहीं की भाषा बोलता है। अगर भाषा पैतृक संपत्ती होती तो अपने ही माता-पिता की भाषा बोलेगा।

5. उदाहरण एक लड़के को बचपन में भेडिया उठा ले गया, उसको भेडिये जैसी आदतें लगीं।

(कोई भी चार मुद्दे, एक मुद्दे को ½ अंक)

(2) श्रवण कौशल की विशेषताएँ : 2

(*i*) सुनने की क्रिया कानों से की जाती है।

(ii) सुनकर बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया जाता है, 70% (प्रतिशत) ज्ञान कर्णेंद्रिय से प्राप्त किया जाता है।

(iii) परिवार के लोगों की भाषा सुनकर नये शब्द मालूम कराना है। श्रवण से शब्दभंडार बढ़ता है।

(iv) श्रवण से बालक पर विशुद्ध संस्कार होते हैं।

(v) शुद्ध उच्चारण, शुद्ध भाषा के लिए श्रवणेंद्रिय निर्दोष होने चाहिए तभी शुद्ध भाषा ग्रहण करेगा।

(vi) श्रवण शक्ति ही बोलने की क्षमता का मूलाधार है।

(हर एक मुद्दे को ½ अंक, कोई भी 4 मुद्दे)

अथवा

पठन के उद्देश्य :

(i) ज्ञानप्राप्ति

(ii) मनोरंजन

(iii) रसास्वाद

(iv) सांस्कृतिक विकास।

(3) हिंदी भाषा के राष्ट्रीय उद्देश्य : 2

(i) स्वतंत्रता के बाद प्रादेशिकता की भावना थी, राष्ट्रीय इष्टि और राष्ट्रीय चरित्र का पतन यह आधुनिक भारत की सबसे बड़ी समस्या मिटाने के लिए।

(ii) भारत एकसंघ होने के बावजूद भी विभाजन के कगार पर खड़ा महसूस होता है।

(iii) विविधता भरे भारतरूपी चमन के फूलों को एक धागे में पिरोने का काम हिंदी ही कर सकती है।

(iv) आंतरप्रान्तीय विचारों का आदान-प्रदान का माध्यम हिंदी ही कर सकती है।

(v) विशाल राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का काम करती है।

(vi) हिंदी बोलने वाला पूरे भारत में घूम सकता है।

(कोई भी चार मुद्दे, हर एक मुद्दा ½ अंक के लिए)

अथवा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार गाभाभूत घटक :

(दस में से कोई भी चार लिखिए)

(4) विशेषण की परिभाषा और उदाहरण : 2

परिभाषा : जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए उस विकारी शब्द को विशेषण कहते हैं।

उदाहरण : परिश्रमी विदयार्थी सदैव सफलता पाते हैं।

मैंने पुस्तकालय से तीन पुस्तकें ली हैं।

वह लाल है।

यह छोटा है। आदि की तरह

अथवा

क्रिया की परिभाषा और भेद :

परिभाषा : क्रिया वह विकारी शब्द है जिससे किसी पदार्थ या प्राणी के विषय में कुछ विधान किया जाता है।

भेद : (1) अकर्मक क्रिया :

उदाहरण : सीता चलती है।

कीड़ा रेंगता है। आदि

(2) सकर्मक क्रिया :

उदाहरण : नेता भाषण देता है।

कुत्ता हड्डी चबाता है। आदि

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 120 से 160 शब्दों में लिखिए :

(1) राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ लिखिए – 3

1. राष्ट्र के बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है।
2. उसका साहित्य ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में विस्तृत तथा उच्च कोटि का हो।
3. उसका शब्द भंडार और विचारक्षेत्र व्यापक हो।
4. उसका व्याकरण सरल हो।
5. उसमें आवश्यकतानुसार देशी-विदेशी शब्द भी अपनाए गए हों।
6. उसकी लिपि सरल हो।
7. साहित्य में राष्ट्रीय संस्कृति की आत्मानुभूति हो।

अथवा

हिंदी संरचना का अध्यापन में महत्व :

1. विषय संरचना से विषय एवं पाठ्यांश की विविध शाखा-उपशाखाएँ समझ में आती हैं।
2. संरचना के कारण एक उपघटक का दूसरे उपघटक के साथ होने वाला संबंध समझ में आता है।
3. संरचना के आधार पर पाठ्यांश का अध्ययन और अध्यापन अत्यंत सूक्ष्मता के साथ होता है।

4. विषय संरचना निश्चित करने से अध्यापन करते समय घटक, उपघटक, मुद्दे एवं उनकी क्रमबद्धता स्पष्ट होती है।

5. पाठ्यक्रम का वार्षिक नियोजन, घटक नियोजन, शैक्षणिक साधनों का नियोजन आदि में संरचना की सहायता महत्वपूर्ण होती है।

6. संरचना के ज्ञान से अध्यापन प्रभावी एवं सफल होता है।

(2) **व्याकरण अनुवाद प्रणाली के लाभ :** 3

1. एक तो भाषा की पढ़ाई द्रुत गति से होने के कारण शिक्षकों के समय की बचत हो जाती है और छात्र की शीघ्र प्रगति में यह प्रणाली सहायक सिद्ध होती है।

2. शब्द और वाक्य का ठीक-ठीक अर्थ इस पद्धति से छात्रों के ध्यान में आसानी से आ जाती है, और एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में प्रकट करने की क्षमता भी उनमें निर्माण होती है।

3. इस प्रणाली से व्याकरण के आधार पर एक नवीन भाषा आसानी से आत्मसात की जा सकती है और अनुवाद के सहारे रचना विशेष, मुहावरे आदि का सही परिचय भी प्राप्त किया जा सकता है।

4. अनुवाद का एक लाभ यह भी है कि उससे मातृभाषा और नवीन भाषा की आसानी से तुलना की जा सकती है।

5. छात्रों के भाषाज्ञान की जाँच भी इस प्रणाली द्वारा सुलभता से की जा सकती है।

6. प्रत्येक शब्द का अनुवाद मराठी में करने के कारण शब्दभंडार बढ़ता

अथवा

संभाषण प्रणाली के गुण :

1. इस प्रणाली में वातावरण निर्मिती को महत्व दिया गया है।
2. इस प्रणाली में प्रश्नोत्तर के लिए महत्व दिया गया है।
3. छात्रों में जो सहजात प्रवृत्तियाँ होती हैं, उनमें क्रीडन प्रवृत्ति को महत्व इस प्रणाली में दिया जाता है।
4. इस प्रणाली में 'सरल से जटिल की ओर' 'ज्ञान से अज्ञान की ओर', सिद्धान्तों का अवलंब किया जाता है।
5. यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक है।
6. इस प्रणाली के अंतर्गत मौखिक कार्य पर अधिक बल देने के कारण बालक भाषा जल्दी आत्मसात कर लेता है।

(3) **भूमिकापालन पद्धति से पाठाध्यापन में मर्यादाएँ :** 3

1. इस पद्धति का प्रयोग करने वाला अध्यापक/शिक्षक स्वयं उत्साही, कल्पक तथा सर्जनशील रहना चाहिए।
2. नाट्यीकरण पद्धति के समान इस पद्धति में कोई विशेष तैयारी न होने के कारण भूमिका पालन प्रभावी ढंग से नहीं होता।
3. विशिष्ट घटकों के लिए ही यह पद्धति उपयुक्त है।
4. इस पद्धति में समय ज्यादा लगता है।
5. इस अध्यापन पद्धति को 'बचकानापन' कहा जाता है।
6. छात्र भी भूमिकापालन करने के लिए राजी नहीं होते। उनको लगता है कि अध्यापक को केवल अध्यापन ही करना चाहिए इन व्यर्थ की बातों में समय नहीं गँवाना चाहिए।

(4) कक्षा 5वीं के लिए भाषण विकास उपक्रम :

1. चर्चा
2. वादविवाद
3. कथाकथन
4. नाट्यवाचन
5. कविता वाचन
6. वक्तृत्व स्पर्धा।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 से 250 शब्दों में लिखिए :

(1) भाषा को आत्मसात करने में कक्षांतर्गत क्रियाएँ : 4

1. गेय पदों का संग्रहण करके उनका गायन व्यक्तिगत और सामूहिक रीति से करना।
2. ऑडियो सीडी के द्वारा किसी पाठ, घटना, प्रसंग का वर्णन सुनाना।
3. भाषिक खेल के अंतर्गत-पहेलियाँ पूछना, सुनना और पहचानना।
4. वाद-विवाद करना, किसी घटना या कहानी पर चर्चा, साक्षात्कार, नाट्यीकरण आदि।
5. सस्वर आदर्श पठन का प्रस्तुतिकरण।
6. गद्यांश या पद्यांश पढ़कर नीचे दिए हुए प्रंश्नों के उत्तर लिखना।
7. ढाँचों के आधार पर कहानी लेखन।
8. मुहावरे एवं कहावतों का लिखकर संग्रह करना।

अथवा

भाषा अभिरुचि विकास के लिए विविध उपक्रम :

1. हिंदी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करना।
2. हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन करना।
3. आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रमों को सुनने और देखने का मौका दें।
4. सस्वर वाचन, मौनवाचन, मुहावरे-कहावतें कंठस्थ करना।
5. एकांकी या नाट्य प्रवेश का प्रस्तुतीकरण।
6. हस्तलिखित, मासिक पत्रिका का संपादन।
7. मुलाखत लेखन।
8. सद्विचारों का संग्रह करना।
9. हिंदी दिवस और अन्य दिवस मनाना।
10. भित्तिपत्रिका, भाषिक खेल का आयोजन।

(2) अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक में परस्पर संबंध : 4

	अभ्यासक्रम	पाठ्यक्रम	पाठ्यपुस्तक
1.	अभ्यासक्रम के लिए अंग्रेजी शब्द curri-culum है	पाठयक्रम के लिए अंग्रेजी शब्द Syllabus है।	पाठयपुस्तक के लिए अंग्रेजी शब्द Text-Book है।
2.	शैक्षणिक उद्देश्य पूर्ति का एक साधन।	अभ्यासक्रम का अंश या हिस्सा मात्र।	अभ्यासक्रम के ध्येयों की पूर्ति के लिए आवश्यक।

3.	औपचारिक शिक्षा का संपूर्ण नियोजन।	अभ्यासक्रम द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति।	अध्यापकों के लिए अध्यापन कार्य में सुविधा।
4.	अभ्यासक्रम का स्वरूप व्यापक तथा विस्तृत होता है।	पाठयक्रम अभ्यासक्रम पर आधारित होता है।	पाठ्यक्रम ज्ञान ग्रहण करने का उत्तम साधन।
5.	अभ्यासक्रम से छात्रों तथा समाज की उन्नति संभव है।	छात्र के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।	पाठ्यक्रम का निर्वाह पाठ्यपुस्तक में होता है।

अथवा

हिंदी शिक्षा के विशेष उद्‌देश्य :

1. हिंदी में कही गई बातें सुनाकर सही तरह से ग्रहण कने की क्षमता विकसित करेंगे।
2. छात्र हिंदी में संभाषण कर सकें इतनी क्षमताएँ विकसित करेंगें।
3. लिखित एवं मुद्रित हिंदी को एक प्रवाह में पढ़ सकें इस योग्य बनाएँगे।
4. छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि एवं प्रेम बढ़ाना।
5. छात्रों में राष्ट्रभक्ति तथा राष्ट्रीय एकात्मता की भावना विकसित करेंगे।
6. हिंदी साहित्य तथा साहित्यकारों का परिचय करवायेंगे।
7. हिंदी कविताओं का समूह गान करने की प्रेरणा देंगे।
8. हिंदी एकांकी में हिस्सा लेने की प्रेरणा देंगे।

(3) **सर्वनाम की परिभाषा - सोदाहरण भेद :** 4

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में आने वाले विकारी शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम :

   मैं, हम, तू, तुम, आप, वह जैसे शब्द का वाक्य में प्रयोग।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम :

   यह, ये, वह, वे जैसे शब्द का वाक्य में प्रयोग।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

   कोई, कुछ, किसी जैसे शब्द का वाक्य में प्रयोग।

4. संबंधवाचक सर्वनाम :

   जो-सो, जिसकी-उसकी, जैसी-वैसी जैसे शब्दों का वाक्य में प्रयोग।

5. निजवाचक सर्वनाम :

   स्वयं, खुद, स्वतः जैसे शब्द का वाक्य में प्रयोग।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम :

   क्या, कौन, किसने जैसे शब्द का वाक्य में प्रयोग।